आर. एन. आई – राजहिन/2003/9899 डाक पंजीयन संख्या – श्रीगंगानगर/105/2015-2017

मासिक पत्रिका

अजायब ❋ बानी

वर्ष : पंद्रहवां | अंक : पहला | मई – 2017

4 सन्तां दा कर लै संग मना

5 राजघराने की बेटी
(सतसंग)

17 हम भजन–अभ्यास क्यों न करें?
(सवाल–जवाब)

29 भजन–अभ्यास
(अमृतवेला)

34 धन्य अजायब
(सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी)

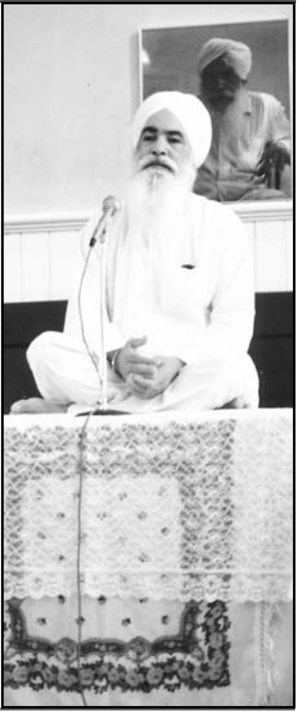

संपादक-प्रेम प्रकाश छाबड़ा
99 50 55 66 71 (राजस्थान)
98 71 50 19 99 (दिल्ली)

विशेष सलाहकार-गुरमेल सिंह नौरिया
96 67 23 33 04
99 28 92 53 04

उप संपादक-नन्दनी

सहयोग-ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने नेशनल प्रिन्टर्स,नारायणा, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर – 335 039 जिला – श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

e-mail : dhanajaibs@gmail.com | Website : www.ajaibbani.org

प्रकाशन दिनांक 1 मई 2017 –182– मूल्य – पाँच रुपये

सन्तां दा कर लै संग मना

सन्तां दा कर लै संग मना, चढ़ जाऐ नाम दा रंग मना
होमैं नूं अंदरों, होमैं नूं अंदरों कढ़णा ऐं
आदत भैड़ी नूं छडणा ऐं,
सतगुरु दी शरणी, सतगुरु दी शरणी पैणा ऐं,
नाम जप के लाहा लैणा ऐं,

1. तैनूं मिलया मानस जामा ओऐ, तूं सांभ लवीं इंसाना ओऐ, (2)
लाहा लैण प्राणी, (2) आया ऐ, माया ने जाल पसाया ऐ,
सतगुरु दी शरणी .....

2. कर बंदगी सोहणा बंदा ऐ, बंदगी दे बाजों गंदा ऐ, (2)
खाली ना जाऐ, (2) दम अड़या, ऐहे चम्म किसे नहीं कम अड़या,
सतगुरु दी शरणी .....

3. सानूं नूरी दर्श दिखा दाता, साडी अक्ख दा पड़दा लाह दाता, (2)
बुरे सहण जुदाईयां, (2) दु:ख अड़या, सानूं तेरे दर्श दी भुख अड़या,
सतगुरु दी शरणी .....

4. असीं जन्म-जन्म दे मैल भरे, उजले सतगुरु कृपाल करे, (2)
ओह तारण आया, (2) तारेगा 'अजायब' दे काज सवारेगा
सतगुरु दी शरणी .....

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

राजघराने की बेटी

गुरु अमरदेव जी की बानी | DVD-550 | रिबोला, इटली

हाँ भई! आपके आगे गुरु अमरदेव जी महाराज का शब्द रखा जा रहा है, यह शब्द बहुत गौर से सुनने वाला है। आपने गुरु को प्राप्त करने के लिए बहुत तलाश की। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जहाँ चाह वहाँ राह।'' आप यह भी कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है जरूर देती है।'' आखिर आपको गुरु अंगददेव जी मिल गए और आपने उनसे नामदान प्राप्त किया। जो आपके तजुर्बे में आया, सच्चखंड पहुँचकर आपने उसे गुरुग्रंथ साहब में दर्ज कर दिया।

सन्त–महात्माओं की बानियाँ बहुत कद्र वाली होती हैं। पता नहीं महात्मा के किस लफ्ज ने हमारी जिंदगी को पलटकर रख देना है! जिसने मिश्री खाई है वही हमें मिश्री का जायका बता सकता है। जो सिर्फ मिश्री के बारे में बातें ही करता है वह हमें मिश्री के जायके के बारे में कैसे बता सकता है? अगर बताता है तो वह खुद गुमराह है और दूसरों को भी गुमराह करता है।

हम सामाजिक लोग यह दावा करते हैं कि हम गुरुमत पर चल रहे हैं, नाम की कमाई कर रहे हैं। सच्चाई यह है कि गुरु के मिलने पर पता चलता है, नाम के मिलने पर पता चलता है कि हम पहले गुरुमत पर चल रहे थे या अब गुरुमत पर चल रहे हैं?

हमारी आत्मा अजर अमर शान्ति के महासागर की एक बूँद है, इसे हमारा मन और बुद्धि समझ नहीं सकते। आत्मा सुखों के

सोमे को छोड़कर पहले मन के मंडल में उतरी, मन के पीछे लगकर आत्मा ने जो कर्म किए वे इसके लिए जंजीरे बन गई। मन ने आत्मा को इन्द्रियों के भोगों में फँसा दिया, यह जैसे–जैसे इन्द्रियों के भोगों में फँसती गई इसकी रोशनी गुम होती गई। यह पापों के भार के नीचे दब गई यहाँ तक अपने आपको भी भूल गई कि मैं उस शान्ति के समुंद्र की एक बूँद हूँ, मैं अपना प्रकाश खो बैठी हूँ और आत्मा यह भी भूल गई कि मैं अजर–अमर हूँ।

आत्मा नीचे कारण मंडल में आई, कारण शरीर धारण किया इसकी रोशनी और मद्धम हो गई। फिर सूक्ष्म देश में उतरी वहाँ महामाया का साथ लेकर रोशनी और ज्यादा मद्धम हो गई। फिर स्थूल देश में आकर उतरी यहाँ इसकी रोशनी बिल्कुल ही खत्म हो गई और यह मन–इन्द्रियों की गुलाम बन गई। यहाँ हम हर काम अज्ञानवश होकर इस तरह करते हैं जैसे अंधा आदमी ऊँची–नीची जगह पर ठोकरे खाता है। हमें यह भी पता नहीं कि हम अच्छा कर रहे हैं या बुरा कर रहे हैं?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि आत्मा **राजघराने की बेटी** है। इसने राजकुमार के साथ शादी करवानी थी और अच्छे राजमहल में रहना था लेकिन इसने मन भंगी के साथ दोस्ती करके अपने आपको गंदा कर लिया। मन इसके ऊपर सब्र नहीं करता यह इन्द्रियों के पीछे दौड़ा फिरता है, इससे विषय–विकारों का बोझ उठवाता है। इस तरह यह अपने आपको और भी जंजीरों में जकड़ लेती है अपने ऊपर मैल लगा लेती है।

हम मन–इन्द्रियों के वश होकर जो कर्म करते हैं उन्हें भोगने के लिए हमें फिर इस संसार में जन्म लेना पड़ता है। सब

लोग अपनी–अपनी जगह दुखों से भरे हुए नजर आते हैं ऐसे ही एक–दूसरे का पर्दा होता है; सब फोड़े की तरह भरे बैठे हैं।

सन्त–महात्माओं ने इंसानी जामें को ऊँचे से ऊँचा सारी योनियों का सरदार कहकर बयान किया है फिर भी यह सुखी नहीं। आत्मा को निचले जामों में जाना पड़ता है तो यह वहाँ किस तरह सुख प्राप्त कर सकती है? इंसान की खुराक के लिए रोज लाखों–करोड़ो पशु काटे जाते हैं, उन तड़पते हुए जानवरों की जान निकाली जाती है। वे जानवर किस तरह कष्ट सहते हैं हो सकता है वे भी किसी समय अच्छे सेठ–साहूकार हों। किस तरह बुरे कर्मों की सजा सहनी पड़ती है? शिकारी लोग जानवरों को घायल कर देते हैं, वे जानवर दुःखी होकर तड़पते हैं।

मछली को कुंडी में फँसाकर बाहर खींच लेते हैं जान उसे भी प्यारी होती है, वह जान बचाने के लिए तड़पती है। हम घायल जानवरों पर बोझ लाद देते हैं उन्हें टाँगों–गाड़ियों के आगे जोड़ते हैं, उन्हें ऊँची–नीची जगह और टूटी–फूटी सड़को पर चलना पड़ता है। जब इन जानवरों से बोझ नहीं खींचा जाता तो इन पर बार–बार चाबुक पड़ते हैं।

प्यारेयो! वह कौन सी अदालत है जहाँ जाकर ये जानवर फरियाद करें। बुरे कर्मों की सजा भुगतने के लिए हमें और भी निचले जामों में जाना पड़ता है। हम ये कष्ट इसलिए सहते हैं क्योंकि हमने इंसानी जामें की कद्र नहीं की। परमात्मा ने हमें इंसानी जामें का जो मौका दिया था उसे हम फिजूल इन्द्रियों के भोगों में, लापरवाही में खो जाते हैं।

कबीर साहब कहते हैं, ''जान सबको प्यारी है। दर्द सबको होता है लेकिन हम जीभ के स्वाद के लिए किसी की जान लेते समय सोचते नहीं।''

आप ठंडे दिल से सोचकर देखें! अगर डॉक्टर हमारे फायदे के लिए छोटी सी सुई उबालता है तो हमारी छह फुट की देह काँपने लग जाती है कि पता नहीं क्या होगा? सोचें! हम फायदे वाली सुई का भी कितना दर्द महसूस करते हैं घबराते हैं। क्या इन जानवरों को दर्द नहीं होता? अगर वह दयालु पिता रहम करके खुद इंसान का चोला धारण करके अपने घर जाने की जानकारी न देता, नाम का भेद न देता तो कर्म करने या कर्म काटने की जंजीर कभी भी खत्म न होती।

सूरज प्रकाश रूप है सबको रोशनी देता है लेकिन अभागे उल्लु को सूरज नहीं दिखता। उल्लु खड्डो–खोलों में जाकर अपना दिन बिताता है। सूरज कुल कायनात को रोशनी देता है लेकिन उल्लु के भाग्य में सूरज की रोशनी नहीं।

इसी तरह सन्त–सतगुरु हमेशा ही संसार में आते हैं और खुले दिल से नाम की दात लुटाते हैं लेकिन हम जीव किसके भाग्य लाएं? हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि मुक्ति नाम है। हम महात्माओं से फायदा उठाएं लेकिन हम सदा ही महात्माओं की मुखालिफत में समय बिताकर चले जाते हैं।

हाँ भई! गौर से सुनें गुरु अमरदेव जी महाराज हमें इस मुत्तलिक बड़े प्यार से समझा रहे हैं:

करम होवै सतगुरु मिलाए।। सेवा सुरत शबद चित लाए।।

आप प्यार से कहते हैं, ''परमात्मा ने यह फैसला अपने हाथ में रखा है कि किसे अपने साथ मिलाना है या किसे संसार में अभी और चक्कर लगवाने हैं? जब हमारे बहुत सारे जन्मों के नेक कर्म जमा हो जाते हैं तब प्रभु हमारे अच्छे कर्मों का यह ईनाम देता है कि हमें पूरे सतगुरु की शरण में लेकर आता है। सन्त–सतगुरु हमारे ऊपर दया करते हैं, वे हमारी सुरत को शब्द–नाम के साथ जोड़ देते हैं। अगर प्रभु हमारे ऊपर दया न करे तो हमारे अंदर नाम की इच्छा पैदा ही नहीं होती।''

बेशक हम रोज महात्मा के पास बैठे रहें! बेशक महात्मा हमारे घर में ही क्यों न जन्म ले लें! बेशक हम उनके घर में ही क्यों न जन्म ले लें! फिर भी हम उन्हें पहचान नहीं सकते। इतिहास इस तरह की मिसालों से भरे पड़े हैं। आज हम गुरु नानकदेव जी को बड़े फक्र से याद करते हैं कि आप प्रभु रूप संसार में आए थे। आपने आत्माओं को बहुत फायदा पहुँचाया था। आपके दो बच्चे लखमी दास और श्री चन्द थे। लखमी दास ने तो आपके जीवन काल में ही शिकार खेलना शुरू कर दिया था और श्री चन्द ने आपसे नाम नहीं लिया, अविनाशी मुनि को अपना गुरु धारण किया, उस अविनाशी मुनि से 'दो–शब्द' का भेद लिया था।

बाबा अमोलक दास को श्री चन्द से 'दो–शब्द' का भेद मिला था। बाबा बिशनदास जी को अमोलक दास से 'दो–शब्द' का भेद मिला था। मुझे भी बाबा बिशनदास जी से 'दो–शब्द' का भेद मिला था। बाबा अमोलक दास से मेरा मिलाप हुआ है मैंने उन्हें दूध पिलाया है। वह बहुत अच्छे साधु थे, वह इस संसार में 140 साल तक रहे।

लैहणा के कर्मों ने साथ दिया। लैहणा (अंगददेव) ने लोक–लाज छोड़कर गुरु नानकदेव जी को परमात्मा रूप समझकर उनकी सेवा की। लैहणा ने गुरु नानकदेव जी की आज्ञा का पालन किया। जब सेवक ही सब कुछ ले जाता है तो बच्चों के दिल में विरोधता आई, कष्ट पैदा हुआ। श्री चन्द ने भी गुरु अंगदेव के बराबर ही उदासी सम्प्रदाय चलाया।

आप सोचकर देख लें! गुरु नानकदेव जी के माता–पिता सदा ही आपको समझाते रहे कि यह किसी न किसी तरह समझ जाए। अगर उन्हें यह पता होता कि यह भगवान है तो वे अपने जीवन काल में ही उनसे फायदा उठाते। गुरु नानकदेव जी अपनी बानी में लिखते हैं:

भागहीन गुरु न मिले निकट बैठयां नित पास।

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी की नौकरी के दौरान एक अर्दली काम करता था। सावन सिंह जी का ख्याल था कि यह बाबा जयमल सिंह से नाम ले ले लेकिन उसकी नाम की तरफ इच्छा नहीं थी। महाराज सावन ने बाबा जयमल सिंह जी के आगे विनती की कि आप इस पर दया–मेहर करें। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''इसके कर्म बहुत कठोर हैं, बेशक यह कितने भी जन्म ले ले इसके अंदर नामदान की इच्छा पैदा ही नहीं होगी।''

इसी तरह महाराज सावन सिंह जी अपने एक दोस्त किशन सिंह की कहानी सुनाया करते थे। किशन सिंह पाँच–छह घंटे गुरुबानी पढ़ता था। महाराज सावन के दिल में ख्याल आया कि किशन सिंह नेक–पाक है अगर यह नाम ले ले तो बहुत कमाई

करेगा, प्रभु से मिल जाएगा। महाराज सावन ने बाबा जयमल सिंह से विनती की कि मैं अपने दोस्त किशन सिंह को आपके पास भेजूंगा वह पांच–छह घंटे गुरुबानी पढ़ता है, आप उसे नाम दे देना। बाबा जयमल सिंह जी दयालु थे। आप दिलों की जानते थे। बाबा जयमल सिंह जी ने कहा कि उसे भेज देना।

किशन सिंह बाबा जयमल सिंह जी के पास आया और चार–पांच घंटे बाबा जयमल सिंह जी के पास बैठकर अपनी ही बातें करता रहा। सन्त बहुत दयालु होते हैं अगर कोई बात सुनाए तो सन्त उसकी बात को टोकते नहीं प्यार से सुनते हैं अगर कोई सन्तों की बात सुनना चाहे तो सन्त प्यार से सुनाते हैं। किशन सिंह पांच–छह घंटे बाद चला गया। महाराज सावन सिंह जी ने आकर बाबा जयमल सिंह जी से पूछा कि आपने किशन सिंह को नाम दे दिया? बाबा जयमल सिंह जी ने कहा, ''इसके बहुत सख्त कर्म हैं। यह नाम की तरफ आ ही नहीं सकता, इसने जीते जी सड़कर मरना है।'' महाराज सावन सिंह जी यह वाक्या सुनाया करते थे कि मकान में आग लगी और किशन सिंह उसमें जलकर मर गया।

गुरु अमरदेव जी कहते हैं, ''हमारे ऊँचे भाग्य हों तो हमारा मिलाप गुरु के साथ होता है। गुरु हमारी सुरत को शब्द–नाम के साथ जोड़ते हैं अगर हमारे और ऊँचे भाग्य हों तो हम शब्द–नाम की कमाई करते हैं।''

हौमैं मार सदा सुख पाया माया मोह चुकावणिआं।।
हौं वारी जीओ वारी सतगुर कै बलिहारणिआं।।

आप कहते हैं, '' नाम की कमाई करने से यह फायदा हुआ कि हमारे अंदर से हौमें का जबरदस्त पर्दा हट गया क्योंकि अहंकार ही हमारे और परमात्मा के बीच एक दीवार होती है, वह दीवार नाम की दवाई से खत्म हो गई। मुझे अब पता लगा कि नाम क्या वस्तु है? मेरा घर सचखंड शान्ति का देश है, मेरे अंदर शान्ति आ गई। मैं गुरु अंगददेव जी के ऊपर बलिहार जाता हूँ जिन्होंने मुझे नाम के साथ जोड़ा, नाम का भेद दिया।''

गुरमत्ती परगास होआ जी अनदिन हरगुण गावणिआं।।

आप कहते हैं, ''आत्मा इन्द्रियों की मैल में लिपटकर अपने घर, अपने प्रकाश को भूल गई थी। जब अपने मन की मत छोड़कर गुरु की मत पर चले तब अंदर वही प्रकाश हो गया, ज्योत प्रकट हो गई।''

तन मन खोजे ता नाओं पाए।। धावत राखै ठाक रहाए।।

हम किस तरह नाम प्राप्त कर सकते हैं? पहले तन की खोज करनी है फिर मन की खोज करनी है। हमें यह युक्ति सतगुरु से मिलती है कि हमने किस तरह तन को विषय–विकारों से नेक–पाक रखना है और किस तरह मन को बुरे ख्यालों से मोड़कर सन्तों के दिए हुए सिमरन में लगाकर पवित्र करना है।

गुर की बाणी अनदिन गावै सहजे भगति करावणिआं।।
इस काया अंदर वस्त असंखा। गुरमुख साच मिलै ता वेखा।।
नौं दरवाजे दसवैं मुकता अनहद शबद वजावणिआं।।

अब गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमारी देह हड्डी चमड़े और माँस की ही नहीं इसमें प्रभु ने बेशुमार वस्तुएं रखी हैं और वह प्रभु खुद भी इस देह के अंदर बैठ गया है। कोई सच्चा–सुच्चा गुरमुख मिल जाए, वह देह के अंदर जाने का भेद दे दे तो मैं यह सब देख सकता हूँ।''

हमारे शरीर के नौं द्वार हैं। दो आँखों के सुराख, दो नाक के सुराख, दो कान के सुराख, एक मुख और दो नीचे की इन्द्रियों के सुराख हैं। ये द्वार बाहर जगत की तरफ खुलते हैं। प्रभु ने दसवां द्वार गुप्त रखा हुआ है जिसमें प्रभु वज्र किवाड़ लगाकर खुद बैठ गया है, यह द्वार अंदर की तरफ खुलता है। परमात्मा ने सन्त–महात्माओं को नाम की चाबी देकर इस दसवें गुप्त द्वार को खोलने के लिए भेजा है।

गुरु कुंजी पाहु निवल मन कोठा तन छत।
नानक गुरु बिन मन का ताक न उघड़े अवर न कुंजी हथ।।

गुरु रामदास जी महाराज कहते हैं:

नौं दरवाजे धावत नवे दर फीके रस अमृत दसवें पीजे।

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि हमारी देह अमृत से भरी हुई है लेकिन हम इस अमृत की खोज बाहर करते हैं, बाहरमुखी हो जाते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

घर ही में अमृत भरपूर है मनमुखां साध न पाया।
ज्यों कस्तूरी मृग न जाने ओह भरम दा भरम भरमाया।।

गुरु अमरदेव जी महाराज कहते हैं, ''अपनी फैली हुई आत्मा को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे तीसरे तिल पर लाएं।

वहाँ परमात्मा के घर का दरवाजा है, वहाँ दिन–रात अनहद शब्द धुनकारे दे रहा है।''

सच्चा साहिब सच्ची नाई ।। गुरपरसादी मंन वसाई ।।
अनदिन सदा रहै रंग राता दर सच्चै सोझी पावणिआं ।।

आप कहते हैं, ''वहाँ सच्चा साहब है, वह सच्चा न्याय करता है। वहाँ पहुँचकर सहज अवस्था प्राप्त हो जाती है। परमात्मा के सच्चे दर पर आत्मा को शोभा मिलती है।''

पाप पुंन की सार न जाणी ।। दूजै लागी भरम भुलाणी ।।
अग्यानी अंधा मग न जाणै फिर फिर आवण जावणिआं ।।

मैंने पहले ही बताया था कि हम जो भी कर्म करते हैं अज्ञानवश करते हैं। जिस तरह अंधा आदमी ऊँची–नीची जगह पर धक्के खाता फिरता है। हम जो भी अच्छा–बुरा कर्म करते हैं उसका नतीजा हमें भुगतना पड़ता है इसलिए हम बार–बार जन्म लेते हैं ठोकरें खाते हैं फिर कर्म करते हैं फिर ठोकरें खाते हैं।

गुर सेवा ते सदा सुख पाया ।। हौमैं मेरा ठाक रहाया ।।
गुर साखी मिटया अंधिआरा बजर कपाट खुलावणिआं ।।

अब आप प्यार से कहते हैं, ''वे जीव खुशकिस्मत हैं जिन्हें पूरे गुरु की सेवा का मौका मिल जाता है। सेवा करने से हमारा तन, मन और धन पवित्र हो जाता है। हमारे अंदर जो वज्र का किवाड़ लगा है वह खुल जाता है, अंदर का मार्ग किताब की तरह खुल जाता है। फिर हमें पता लग जाता है कि हमने किस दिशा में जाना है और किस दिशा में नहीं जाना? जब हम अपनी

मत छोड़कर गुरु की मत पर चलते हैं तो अज्ञानता का अंधेरा खत्म हो जाता है, अंदर ज्ञान का प्रकाश हो जाता है।''

हौमैं मार मंन वसाया।। गुर चरणी सदा चित लाया।।
गुर किरपा ते मन तन निरमल निरमल नाम ध्यावणिआं।।
जीवण मरणा सभ तुधै ताईं।। जिस बखसे तिस दे वड्याई।।
नानक नाम ध्याय सदा तूं जंमण मरण सवारणिआं।।

अब आप कहते हैं, ''जब हम गुरु के दिए हुए उपदेश पर चलते हैं नाम की कमाई करते हैं तो हमारा तन और मन निर्मल हो जाता है। नाम की कमाई करने से हमारे अंदर से हौमैं–अहंकार चले जाते हैं।''

आप आखिर में एक ही हिदायत करते हैं कि आप नाम की कमाई करें। आप किसी और साधन से कारगर नहीं हो सकते, जन्म–मरण और दु:खों से नहीं बच सकते। अगर जन्म–मरण के दु:खों से बचना है शान्ति के देश में पहुँचना है तो आप शब्द–नाम की कमाई करें। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

शब्द विसारन तिन्हां ठौर न ठांव।।
ओह भ्रमे भूले ज्यों सुन्ने अंदर कांव।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं:

वे क्यों आए इस जगत में जिन्हें मिली न पूँजी शब्द की।।
वडभागी ओह जीव है जो करे कमाई शब्द की।।

गुरु अमरदेव जी महाराज ने बड़े प्यार से हमें अपना तजुर्बा समझाया है कि जब प्रभु हमें बख्शना चाहता है तब हमारा मिलाप गुरु से करवाता है। जब गुरु हमें बख्शता है तो वह हमें शब्द–

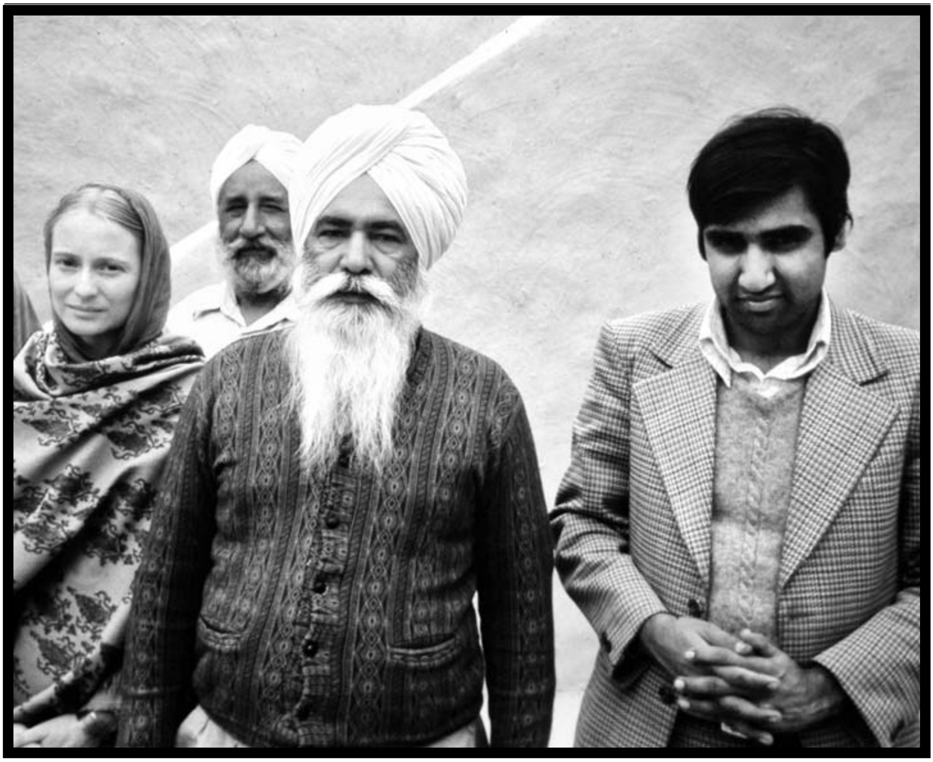

नाम के साथ जोड़ता है। शब्द–नाम की कमाई करने से हमारे अंदर से अज्ञानता का अंधेरा दूर हो जाता है और हौमें–अहंकार हमारा साथ छोड़ देते हैं। हम प्रभु की भक्ति में लगकर अपने तन–मन को पवित्र कर लेते हैं। प्रभु सच्चे न्याय वाला है जो प्रभु की भक्ति करते हैं प्रभु उन्हें अपने घर में जरूर जगह देता है।

जीवण मरणा सभ तुधै ताईं ।। जिस बखसे तिस दे वड्याई ।।
नानक नाम ध्याय सदा तूं जंमण मरण सवारणिआं ।।

23 मई 1989

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

हम भजन–अभ्यास क्यों न करें?

16 पी. एस. रायसिंह नगर आश्रम, राजस्थान

एक प्रेमी:– *एक शादी–शुदा नामलेवा जोड़े की अगर औलाद न हो तो क्या उन्हें बच्चा पैदा करने से बचना चाहिए या बच्चा पैदा करना चाहिए?*

बाबा जी:– जिस ताकत ने यह रचना रची है उसी ताकत ने शादी के बाद हमारे अंदर औलाद पैदा करने की इच्छा भी उत्पन्न की है। अगर किसी शादी–शुदा जोड़े की औलाद नहीं है फिर भी उनमें औलाद होने की इच्छा स्वाभाविक है।

सन्त हमें यह नहीं कहते कि आप बच्चे पैदा करें या बच्चे पैदा न करें, यह हम पर निर्भर करता है। सन्त कहते हैं अगर आप बच्चों का पालन–पोषण कर सकते हैं तो आप बच्चे पैदा करें अगर आप बच्चों का पालन–पोषण ठीक से नहीं कर सकते तो यही अच्छा है कि आप बच्चे पैदा न करें; यह पूरी तरह से पति–पत्नी की इच्छा पर निर्भर है।

77 आर.बी. राजस्थान आश्रम में एक अमेरिकन औरत मुझसे मिलने आई। उस औरत ने मुझसे पूछा कि उसकी ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने की इच्छा ठीक है या गलत है? मैंने उससे कहा, ''इस बारे में मैं तुम्हें क्या कह सकता हूँ? वक्त आने पर तुम्हें अपने आप ही पता लग जाएगा।''

अगले साल जब मैं अमेरिका गया, वह औरत मुझसे मिलने आई। तब उसने जुड़वा बच्चों को जन्म दिया था। उसने मुझे

बताया कि उसके लिए दो बच्चों को संभालना मुश्किल हो रहा है अगर उसे हर बार जुड़वा बच्चे पैदा हुए तो उसके लिए बच्चों को संभालना मुश्किल हो जाएगा।

हमें ज्यादा बच्चों की इच्छा रखने से ज्यादा बच्चे नहीं मिल जाते इसलिए ज्यादा बच्चों के बारे में सोचने से अच्छा है कि हम सिमरन के बारे में सोचें। अगर हमारे कर्मों में बच्चे लिखे हैं तो हमें बच्चे मिलेंगे और हमारे कर्म किसी दूसरी आत्मा के साथ जुड़ेंगे। अगर हम शादी–शुदा हैं, हमें बच्चों की चाह है और हमारे पिछले कर्म इसकी इजाजत देते हैं तो बच्चे जरूर होंगे।

अगर हम इच्छा रखकर दान करते हैं या किसी इच्छा को पूरा करने के लिए परमात्मा की भक्ति करते हैं तो उन इच्छाओं को पूरा करने के लिए हमें फिर इस संसार में आना पड़ता है। सन्त हमेशा यही सिखाते हैं कि इच्छा रखकर दान न करें और किसी इच्छा को पूरा करने के लिए परमात्मा की भक्ति न करें। आपको परमात्मा की भक्ति और दान निस्वार्थ करना चाहिए।

महात्मा त्रिलोचन बहुत भक्ति वाले थे। महात्मा त्रिलोचन कहते हैं कि मरते समय हमारे अंदर जो इच्छा होती है उसे पूरा करने के लिए हमें फिर इस संसार में आना पड़ता है। अगर हम सारी जिंदगी बच्चे पैदा करने के बारे में सोचेंगे तो मरते समय हमारा ख्याल उसी तरफ होगा तो उस इच्छा को पूरा करने के लिए हमें सूअर के शरीर में आना होगा। सुअरी एक ऐसा जानवर है जो बहुत बच्चों को जन्म देती है। मुझे इस जानवर के बारे में ज्यादा ज्ञान नहीं है इसलिए मैं आपको पक्का नहीं बता

सकता लेकिन मैंने सुना है कि सुअरी एक बार में बारह बच्चे पैदा करती है और साल में तीन–चार बार बच्चे पैदा करती है।

महात्मा त्रिलोचन यह भी कहते हैं अगर कोई मरते समय दुनियावी भोग की इच्छा रखता है तो उसे वेश्या के शरीर में आना पड़ता है। अगर मरते समय कोई आदमी किसी औरत के साथ भोग वासना के अपवित्र विचार रखता है या कोई औरत अपने पति या दूसरे आदमी के साथ भोग विलास के विचार रखती है तो वे वेश्या के शरीर में वापिस आएंगे और कितने ही लोगों के साथ भोग विलास करके तृप्त नहीं होंगे।

अगर कोई बड़ी–बड़ी बिल्डिंगे या बड़े–बड़े मकानों की चिन्ता करते हुए मरता है तो वह भूत बनकर उन मकानों में रहेगा। जो लोग मरते समय दुनियावी दौलत को याद करते हैं और उन्हें यह चिन्ता रहती है कि वे जिंदगी में ज्यादा दौलत नहीं कमा सके तो वे साँप बनकर इस संसार में आएंगे।

आखिर में महात्मा त्रिलोचन कहते हैं कि जो मरते समय परमपिता परमात्मा को याद रखते हैं जिनके अंदर परमात्मा प्रकट हो चुका होता है वे अपने सच्चे घर सचखंड चले जाते हैं।

सभी सन्त–महात्मा हमें बहुत प्यार से समझाते हैं कि हमारे जन्म लेने से पहले हमारे प्रालब्ध कर्म लिखे जाते हैं। जिंदगी में सुख–दुख, गरीबी–अमीरी, बीमारी–तंदरूस्ती पहले से ही हमारी किस्मत में लिखी होती है और हम इनका भुगतान करने के लिए ही इस संसार में आए हैं। हमें इस जीवन में व्यापार में फायदा हो या नुकसान हो, हमें समाज में शोहरत मिले या नफरत मिले,

हमारे कितने बच्चे होंगे ये सब पहले से ही हमारे भाग्य में लिखा होता है। हम किसी भी तरह से अपना भाग्य नहीं बदल सकते तो **हम भजन–अभ्यास क्यों न करें** ताकि हमें जो भी मिले हम उसका भुगतान बिना किसी शिकायत कर सकें और नए कर्म न बनाएं। तुलसी साहब कहते हैं:

पहले बनी प्रालब्ध पाछे बना शरीर।
तुलसी दासा खेल अचरच है पर मन नहीं बंधदा धीर।।

आप कहते हैं कि यह अदभुत रचना है लेकिन मन इसको मानने के लिए तैयार नहीं।

एक प्रेमी:– *अगर हम कर्मों की वजह से इस संसार में आए हैं तो अज्ञानतावश बुरे कर्म क्यों करते हैं? ऐसा क्यों है कि कुछ लोग सौभाग्यशाली हैं जो आपकी तरह सन्त पैदा हुए हैं?*

बाबा जी:– ऐसा इसलिए है कि हमें इंसानी जामा पिछले कर्मों के भुगतान के लिए मिला है लेकिन हम इस जामें में और नये कर्म बना लेते हैं। हर जन्म के बाद बहुत से कर्म रह जाते हैं जिनका भुगतान नहीं हुआ होता फिर उन कर्मों के भुगतान के लिए दोबारा संसार में आ जाते हैं।

सन्त जानते हैं कि आत्माएं अंजान हैं और ये अंजाने में ही कर्म बना रही है। कम से कम आत्माओं को यह तो पता ही है कि वे जो बीजेंगी वही काटेंगी। हम सब इस नियम को तो जानते हैं अगर हम मिर्चें बीजेंगे तो हम गन्ना कहाँ से काटेंगे? इसलिए सन्त हमेशा कहते हैं, ''आप जो भी कर्म करें सावधानी से करें क्योंकि आपको उसका परिणाम भुगतना पड़ेगा।''

सन्त–महात्मा ऊँचे मंडलों से आए हैं उनका इस दुनिया से कोई लेना–देना नहीं होता। उनके ऐसे कोई कर्म भी नहीं होते जो उन्हें शरीर पर भुगतने पड़े। कुछ समय के लिए उन पर भी माया का पर्दा आ जाता है लेकिन सही समय आने पर थोड़ी सी मेहनत से ही माया का पर्दा हट जाता है उन पर माया का कोई असर नहीं होता।

गुरमुख ते मनमुख दा हो नहीं सकदा मेल।
वक्खो वक्ख दोहां दा रस्ता ज्यों पानी ते तेल।।
इक डोबे दूजा तारे ऐह है अजरज प्रभु दा खेल।
इक बाप दे दो बेटे एक पास ते दूजा फेल।।

पानी और तेल की तरह गुरुमुख और मनमुख एक साथ नहीं रह सकते क्योंकि दोनों का रास्ता अलग–अलग है। दोनों एक पिता के बेटों जैसे हैं जिनमें से एक तो इम्तिहान में पास हो जाता है और दूसरा फेल हो जाता है।

सन्तों और सतसंगियों का एक ही परमात्मा है। परमात्मा देख रहा है इसलिए सन्त कोई बुरा कर्म नहीं करते, परमात्मा के गुण गाते हैं। सतसंगी परमात्मा का गुणगान नहीं करते। सतसंगी परमात्मा से दस साल के बच्चे जितना भी नहीं डरते जबकि परमात्मा उन्हें भी देख रहा है; वे बुरे कर्म करने से भी नहीं हिचकिचाते।

मैं जब बाबा बिशनदास जी के पास गया तब मैंने भोलेपन में उनसे पूछा, ''क्या सच में परमात्मा मेरे अंदर है?'' उस समय बाबा बिशनदास ने मेरा नाम बदल दिया और मुझसे कहा, ''अजायब सिंह! जो तुम्हारे अंदर बोल रहा है उससे पूछो कि वह कौन है?''

एक प्रेमी:– *सन्त जी! अगर गुरु इस दुनिया में बिना किसी कर्म के आते हैं तो वे इतना भजन–अभ्यास क्यों करते हैं?*

बाबा जी:– सन्त संसार में लोगों को डेमोस्ट्रेशन देने के लिए ऐसा करते हैं। अगर वे खुद भजन–अभ्यास नहीं करते तो हमें भजन–अभ्यास के लिए कैसे कह सकते हैं? जो काम आदमी खुद नहीं करता उस काम को करने के लिए वह दूसरों से कैसे कह सकता है? सन्त–महात्मा हमें खाली बैठने के लिए नहीं कहते, वे हमें सख्त मेहनत करने के लिए कहते हैं क्योंकि मेहनत ही सफलता की कुंजी है।

कबीर साहब परम सन्त थे, आप संसार में आने वाले पहले सन्त थे। आप जन्म से ही पूर्ण गुरु थे फिर भी आपने सख्त मेहनत की और किसी को अपना गुरु बनाने की प्रथा को बनाए रखा। आपने रामानन्द को अपना गुरु बनाया। इसमें कोई शक नहीं कि रामानन्द पूर्ण नहीं थे। असल में कबीर साहब ने ही रामानन्द को मुक्ति दिलाई थी। प्रथा को बनाए रखने के लिए कबीर साहब ने रामानन्द को गुरु बनाया था।

आप किसी भी महात्मा का इतिहास पढ़कर देखें! सबने अभ्यास में बहुत मेहनत की। गुरु नानकदेव जी ने ग्यारह साल कंकड़–पत्थरों का बिछौना किया। स्वामी जी महाराज ने सत्तरह–अठारह साल एक छोटे से कमरे में बैठकर अभ्यास किया। इसी तरह बाबा जयमल सिंह जी और हमारे गुरु सावन सिंह जी व कृपाल सिंह जी ने भी अभ्यास में बहुत मेहनत की।

एक प्रेमी :– *सन्त जी! क्या नामलेवा लोग उन लोगों के साथ बैठकर अभ्यास कर सकते हैं जिन्हें नाम नहीं मिला या वे और किसी तरीके से अभ्यास करते हैं ?*

बाबा जी :– जिन लोगों को नाम नहीं मिला उन्हें पता होना चाहिए कि आप अभ्यास कर रहे हैं, वे आपको अभ्यास के दौरान परेशान न करें। अगर कोई अभ्यास करते समय खाँसता है या दूसरी आवाजें निकालकर परेशान करता है तो इससे आपके अभ्यास में बाधा पैदा होती है। अगर बेनामलेवा वहाँ चुप करके बैठ सकें, आपको परेशान न करें, अपना अभ्यास करें और कोई आवाज न करें तो ठीक है।

एक प्रेमी :– *सन्त जी! हमें जो कर्म मिले हैं क्या हम गुरु की मदद से अभ्यास करके उन कर्मों को कम कर सकते हैं?*

बाबा जी :– हाँ! हमारे बहुत से कर्म भजन–अभ्यास करने से खत्म हो जाते हैं। हमारी आत्मा को पूर्व कर्मों का भुगतान करने की शक्ति मिल जाती है। अभ्यास करने वाले सतसंगी खुशी मिलने पर उत्तेजित नहीं होते और दुख आने पर उदास नहीं होते वे किसी भी हालत में अपने गुरु को नहीं भूलते। अभ्यासी जब दुखी होते हैं तो वे समझते हैं कि ये पल खुशी के पलों से बेहतर हैं क्योंकि वे पलों में भुगतान करके अपने कर्म काट रहे हैं।

मुझे कई सतसंगियों से उनके मरने के वक्त मिलने का मौका मिला है। जिस सतसंगी ने बहुत अभ्यास किया है मरते समय उससे पूछें कि उसे दुनिया का कुछ चाहिए या उसकी कोई इच्छा है? तो वह कहेगा, ''नहीं।'' उसे मरते वक्त कोई मुश्किल

नहीं होगी क्योंकि उसे दुनिया का कुछ नहीं चाहिए। उस समय वह आपको खुश होकर दिखाएगा क्योंकि वह जानता है कि वह वापिस अपने घर जा रहा है।

एक प्रेमी:– *सन्त जी! आप मुझे गुरु की इच्छा के अनुसार रहने के बारे में कुछ बताएं? अगर मुझे कभी कोई फैसला लेना हो लेकिन मैंने अपना जीवन गुरु के चरणों में रख दिया हो तो गुरु मुझे सही फैसला करने के लिए मजबूर करेगा क्योंकि मैं उसकी इच्छा स्वरूप हूँ लेकिन जब मैं अपनी मर्जी से रहूँगा तो वह मेरा निर्णय होगा या गुरु का निर्णय होगा?*

बाबा जी:– जो सतसंगी अपने आपको गुरु पर न्यौछावर कर देता है उसकी अपनी कोई मर्जी नहीं रहती।

एक प्रेमी:– *सतसंगी जानते हैं कि नामदान के समय गुरु हमारे अंदर रहता है। हम गुरु के दर्शनों के लिए बहुत दूर से आए हैं। हमारी आत्मा पर गुरु के दर्शनों का क्या असर होगा?*

बाबा जी:– बेचारे सतसंगियों को गुरु के शारीरिक रूप में दर्शनों के फायदे के बारे में पता ही नहीं है। सच तो यह है कि शारीरिक रूप में गुरु हमें केवल बातें समझाता है। वह शरीर में रहते हुए हमें बताता है कि मैं इस रूप में तुम्हारे अंदर बैठा हूँ, जब आप अंदर जाएंगे मुझे इस रूप में पाएंगे। अगर गुरु शारीरिक रूप में न हो तो हम अंदर जाने के लक्ष्य को समझ ही नहीं सकेंगे और कभी अंदर नहीं जा सकेंगे।

हम शारीरिक रूप में काम कर रहे हैं इसलिए हम गुरु को भी शारीरिक रूप में ही देख सकते हैं। अगर हम सूक्ष्म रूप में

आ जाएं तो हम गुरु को भी उसके सूक्ष्म रूप में ही देखने लगेंगे। ब्रह्म में पहुँचने पर गुरु हमें शब्द रूप में दिखेगा। पारब्रह्म में पहुँचने पर गुरु हमें साफ और पवित्र शब्द के रूप में दिखेगा और सचखंड में हम उसे पूरी तरह से पवित्र प्रकाश के रूप में देख सकेंगे। जब हम गुरु को अंदरूनी रूप में देखते हैं तब हमें गुरु के शारीरिक रूप के दर्शनों के महत्त्व का पता चलेगा कि उसके बिना हम अंदर नहीं जा सकते और उसे अलग–अलग रूप में नहीं देख सकते। गुरु अर्जुनदेव जी कहते हैं:

मैं देख देख न रज्जां गुरु सतगुरु देहा।

गुरु नानकदेव जी के शरीर छोड़ने के बाद गुरु अंगददेव ने संगत को राह दिखाई। गुरु अंगददेव जी कहते हैं:

जिस प्यारे स्यों नेह तिस अग्गे मर चलिए।
धृग जीवन संसार है ताँके पाछे जीवनां।।

जब हजरत बाहु के गुरु ने संसार छोड़ा तब हजरत बाहु ने अपने गुरु के बिछोड़े के दर्द में कहा:

ऐह दुःख हमेशा रहसी बाहु, मैं रोंदड़ी ही मर जाँवा हूँ।।

इसी तरह बाबा जयमल सिंह जी के शरीर छोड़ने के बाद एक दिन महाराज सावन सिंह जी सतसंग में अपने गुरु को याद करके बहुत रोए। महाराज सावन अपने गुरु के दर्शनों के लिए सब कुछ त्यागने के लिए तैयार थे।

जब महाराज कृपाल सिंह जी के गुरु बाबा सावन सिंह जी ने चोला छोड़ा तब महाराज कृपाल अपने गुरु के बिछोड़े के दर्द में सब कुछ छोड़कर ऋषिकेश के जंगलों में चले गए।

इसी तरह जब महाराज कृपाल ने चोला छोड़ा तो मैं बता नहीं सकता कि उस समय मेरे साथ क्या हुआ? आपको पता ही है कि मेरे साथ क्या हुआ था? मैं सब कुछ छोड़कर फटे कपड़ों में पागलों की तरह इधर–उधर घूमता रहा। पाठी जी ने मुझे ढूंढ़ा और वे मुझे 77 आर.बी. लेकर आए। उस समय मैंने पाठी जी से कहा कि मैं एक ही शर्त पर यहाँ रहूँगा कि कोई भी पूर्व या पश्चिम से आकर मुझे परेशान नहीं करेगा। मैं गाँव वालो से दिन में एक घंटा ही मिला करूंगा।

मुझे दुनिया के बारे में कुछ पता नहीं था। मुझे दिल्ली के बारे में भी कुछ पता नहीं था और मैं किसी को नहीं जानता था। मैं पप्पू और उसके परिवार को भी नहीं जानता था। मैं पश्चिम में भी किसी को नहीं जानता था क्योंकि महाराज कृपाल ने दुनिया के लिए मेरी आँखें बंद कर रखी थी। आपने मेरी आँखें अंदर की तरफ खोली थी। मैंने गुफा में बैठकर बहुत समय बिताया।

आपके देश कोलंबिया के डॉक्टर मौलिनो बहुत भजन–अभ्यास वाले हैं, यहीं बैठे हैं। आप बड़े प्यार से इनसे पूछ सकते हैं कि क्या इन्होंने कभी मेरे बारे में सुना था, क्या ये मुझे बाहरी रूप में जानते थे या इन्होंने कभी मुझे दिल्ली या कहीं ओर देखा था? जब रसल परकिन्स मुझसे मिला सिर्फ वही जानता है कि उससे मिलने पर मैं कितना खुश या कितना दु:खी हुआ?

मैं बाहर दुनिया में नहीं आना चाहता था क्योंकि मैं सोच रहा था कि मेरे गुरु के चोला छोड़ने के बाद अब मेरे पास क्या बचा है! अब कौन मुझे अपनी गोद में बिठाएगा, कौन मेरे सिर पर हाथ रखेगा और कौन मुझे खाना खाने के लिए देगा?

जब मेरे गुरु ने लोगों से परमात्मा को देखने के लिए आँखें बंद करने के लिए कहा तब मैंने आँखें बंद नहीं की। एक प्रेमी ने महाराज जी से शिकायत की कि मैंने आँखें बंद नहीं की। महाराज जी के पूछने पर मैंने आपसे कहा, ''मैं आँखें बंद क्यों करूं जब मुझे छह फुट लम्बा, चलता–फिरता परमात्मा दिख रहा है।''

आप बहुत पैसा खर्च करके दूर से आ सकते हैं, आप मुझे शारीरिक रूप में देख सकते हैं। लेकिन मैं चाहे कितना भी पैसा खर्च कर लूं कितनी भी लम्बी यात्रा कर लूं मैं कभी भी अपने परमात्मा कृपाल को नहीं देख सकता यही दर्द मुझे हर समय सताता है। इसका मतलब यह नहीं कि महाराज कृपाल मुझसे दूर हैं। आप मेरे अंदर हैं और मेरी हर दलील को सुन रहे हैं। मुझे जो भी चाहिए आप मुझे वह सब दे रहे हैं लेकिन मैं उन्हें चलते–फिरते और बातचीत करते हुए नहीं देख सकता, उनकी गोद में नहीं बैठ सकता और वह सब नहीं कर सकता जो उनके शारीरिक रूप में होते हुए करता था।

13 अक्टूबर को मेरा बहुत बड़ा एक्सीडेंट हुआ, जिसमें हमारी कोई गलती नहीं थी। हम अपनी लाईन में गाड़ी चला रहे थे और हमने 15 फीट की सड़क दूसरे लोगों के लिए छोड़ी हुई थी लेकिन कुछ किसानों ने अपना ट्रेक्टर हमारी गाड़ी के साथ टकरा दिया। किसी को चोट नहीं आई। मैं बेहोश हो गया जब मुझे होश आया तो मेरा दिल टूट गया और मुझे बहुत बुरा लगा। मैं दुनिया को देखकर सोचता हूँ कि महाराज कृपाल मुझे अपने साथ अंदरूनी मंडलों में क्यों नहीं रखते? आपने मुझे वापिस इस दुनिया में क्यों भेजा?

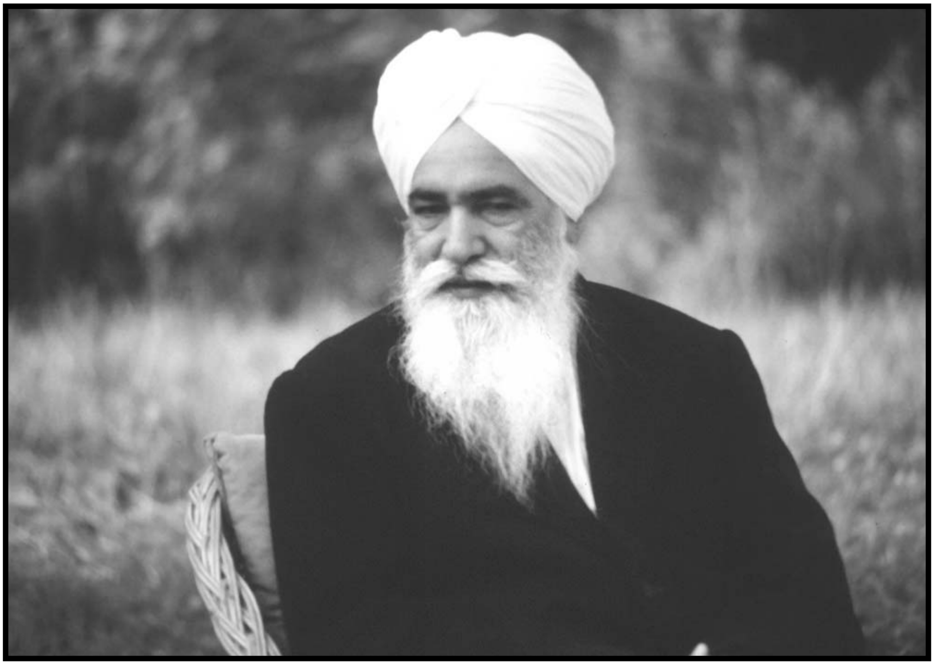

आप भाग्यशाली हैं कि बहुत पैसा खर्च करके लम्बी यात्रा करके आपको अपने गुरु के दर्शन हो जाते हैं। लेकिन मुझ बदकिस्मत को अपने गुरु के दर्शनों का मौका नहीं मिलता। जब आप इस दुनिया में थे तो मुझे कोई चिन्ता नहीं थी, अब मुझे बहुत चिन्ताएं हैं। मैं आपको शारीरिक रूप में नहीं देख सकता।

मित्रों! आप मेरे दर्द और जख्मों के बारे में न पूछें। कृपाल ने मुझे बिछोड़े का दर्द दिया है और मुझे रोते हुए छोड़ गया है।

जो आत्माएं भजन–अभ्यास करती हैं अंदर पहुँची हुई हैं उन्हें गुरु के शारीरिक रूप में दर्शनों के फायदे के बारे में पता है। वे जानते हैं कि उन्हें गुरु के दर्शनों से क्या लाभ प्राप्त होता है? हम दुनियावी लोग गुरु के दर्शनों की महानता नहीं समझते।

***

4 Dec. 1981

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन–अभ्यास

हाँ भई! रोज की तरह शान्त मन से अभ्यास करें, शान्त मन ही अभ्यास कर सकता है। अभ्यास के वक्त बाहर की किसी आवाज की तरफ तवज्जो न दें। आप जिस काम के लिए बैठे हैं आपने उस काम की तरफ तवज्जो देनी है। मन को भटकने न दें तीसरे तिल पर एकाग्र करें।

सतसंगी को सिमरन की महानता का ज्ञान नहीं कि सिमरन के अंदर कितनी शक्ति है और सिमरन कितना जरूरी है? कल मैंने आपको सतसंग में बताया था कि दुनिया का सिमरन ही हमें इस दुनिया में लाता है। जब दुनियादारों के सारे काम पूरे नहीं होते जो काम अधूरे रह जाते हैं आखिरी वक्त उनके संकल्प दिल दिमाग में होते हैं। जीव उन्हें पूरा करने की खातिर उस आशा से बंधा हुआ फिर इस संसार में आता है। सन्तों ने हमारी इस कमजोरी का फायदा उठाते हुए हमें समझाया कि सिमरन को सिमरन और ध्यान को ध्यान काटता है।

कायदा यह है कि हम जिसे याद करते हैं जिसका दिया हुआ सिमरन करते हैं उसका स्वरूप अपने आप ही हमारे अंदर फैलना शुरू हो जाता है। अगर हम दुनिया के कारोबार को याद करते हैं तो दुनिया की शक्लें अपने आप ही हमारे आगे ठहरनी शुरू हो जाती हैं। आखिर जहाँ हमारी आशा होती है अंत समय हमारे ख्याल वहीं होते हैं, हमें वही याद आती है और हम उसी लय में बह जाते हैं। आगे जाकर उसी शक्ल में जन्म लेना पड़ता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जीव ज्यादा दूर जाकर जन्म नहीं लेता। जिस घर में उसका प्यार होता है पहले उस घर में बुजुर्ग था बाद में उस घर में बच्चा या पशु बनकर आ जाता है। ज्यादा से ज्यादा पड़ोस में जाकर जन्म ले लेता है।''

महात्मा हमें प्यार से बताते हैं कि आप सिमरन पर जोर दें हम सिमरन पर जोर नहीं देते, शब्द सुनने पर जोर देते हैं। आमतौर पर शब्द हमें खींचता नहीं क्योंकि हमारी आत्मा बाहर दुनिया में फैली हुई है, शब्द के दायरे में नहीं आ रही। लोहा जब तक चुम्बक के दायरे में नहीं आता चुम्बक उसे खींच नहीं सकता। हमारा फर्ज बनता है कि आत्मा को सिमरन के जरिए तीसरे तिल पर एकाग्र करें शब्द इसे खींचकर ऊपर ले जाएगा। स्वामी जी महाराज कहते हैं:

खींचे सुरत गुरु बलवान।

हमारा काम सिमरन करना है, सुरत को आगे लेकर जाना गुरु का काम है। शब्द सचखंड से उठकर हमारे माथे के पीछे धुनकारें दे रहा है। आप अपने–आप अपनी सुरत को खींच नहीं सकते। आप नौं द्वारें और छह चक्रों को खाली करके सिमरन के द्वारा आँखों के पीछे आएं यहाँ शब्द आ रहा है। यहाँ पहुँचना शिष्य का धर्म है आगे गुरु की ड्यूटी है। वह आपको आपसे पहले वहाँ मौजूद मिलेगा।

दो रास्ते हैं एक दाँया और दूसरा बाँया। बाँये रास्ते के ऊपर काल बैठा है यह हमारी आत्मा की ताक पर है कि यह कब आए मैं इसे संभालूं! गुरु हमारी इंतजार में बैठा है कि मेरी आत्मा कब आए और मैं इसे संभालूं। अगर अंदर गुरु न हो तो

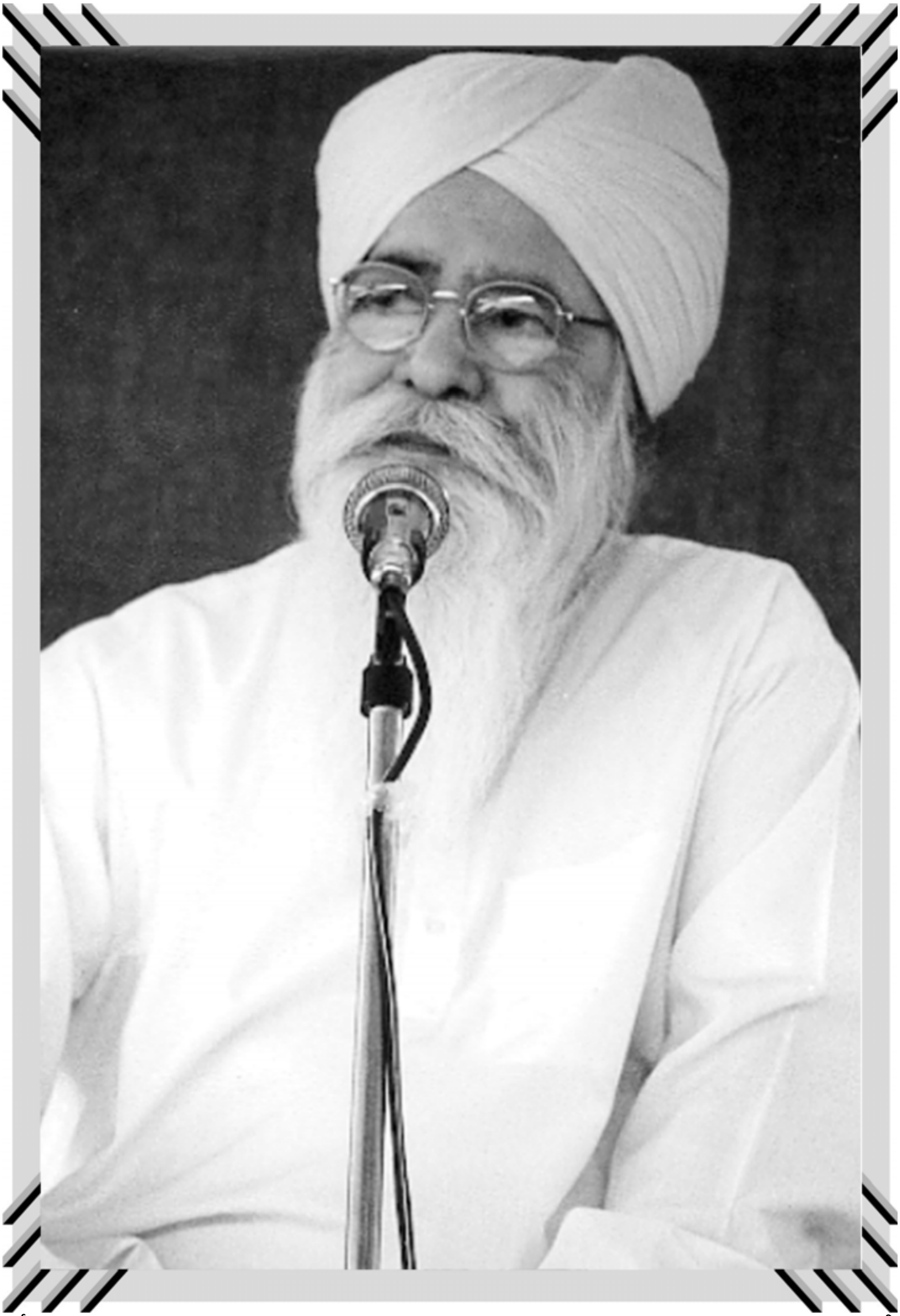

हम यह फैसला ही नहीं कर सकते कि किस शब्द को पकड़ना है, मेरा कौन सा रास्ता है और मैंने कहाँ जाना है? अंदर बहुत झमेला है। बाहर दुनिया में भी हमें कोई गाइड न करे तो हम जगह–जगह पर रूकते हैं अगर हमें यह पता हो कि यह सड़क दिल्ली को जाती है तो हम बिना रूके अपनी कार को दौड़ाते जाएंगे अपना समय खराब नहीं करेंगे। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

अंतर शब्द सुरत धुन जागे सतगुरु झगड़ नबेड़े।

जब हमारी आत्मा जाग जाती है शब्द प्रकट हो जाता है तब सतगुरु हमारा फैसला करता है कि बेटा! इस शब्द को पकड़ो यह साईड मेरी है उस तरफ नहीं जाना वह साईड काल की है। सतसंगियों को पाँच पवित्र नाम बताए जाते हैं, ये नाम बहुत ही ऊँचे हैं। ये नाम उन पाँच मंडलों के हैं जिन्हें अभ्यास के वक्त हमारी आत्मा ने पार करना है। हमारी आत्मा एक से दूसरे मंडल को शब्द के ऊपर सवार होकर ही पार कर सकती है।

मैं बताया करता हूँ कि परमात्मा समुंद्र है शब्द उसकी लहर और आत्मा उसकी बूँद है। समुंद्र भी पानी है लहर भी पानी है बूँद भी पानी है, फर्क सिर्फ बिछोड़े का है। जब यह बूँद उस लहर के साथ मिल जाती है तब लहर उसे लेकर समुंद्र में बैठ जाती है। इसी तरह जो आत्मा गुरु को अंदर प्रकट कर लेती है वह गुरु के साथ बातें करती है। गुरु उसे कहाँ लेकर जाता है? गुरु उसे सच्चखंड लेकर जाता है जहाँ से वह आया है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप हर तरफ से अपना ख्याल हटाकर अपने ख्याल को सिमरन की तरफ जोड़ें

आपका ख्याल अपने आप ही गुरु के साथ जुड़ जाएगा। आपका गुरु के साथ जितना ज्यादा प्यार होगा आपकी उतनी ज्यादा तरक्की होगी। प्यार किए बिना शिष्य का कुछ नहीं बनता, वह तरक्की नहीं कर सकता। गुरु हमारे प्यार का भूखा नहीं, उसे हमारे प्यार की जरूरत नहीं। वह तो खुद अपने गुरु के प्यार में फँसा होता है। वह साँस–साँस के साथ अपने गुरु को याद करता है।''

हमने लगातार सिमरन करना है। सिमरन करते हुए हमें दुनिया के ख्याल न आएं। हम हों और हमारा गुरु हो। इस तरह सिमरन करें कि हमारा ख्याल तीसरे तिल पर टिका रहे। यह हमारे सफर की शुरूआत है, हमारे घर का दरवाजा है। मन को तीसरे तिल पर एकाग्र करें, तीसरा तिल हमारी दोनों आँखों के दरम्यान थोड़ा सा ऊपर है। फर्क तो थोड़ा है यहाँ से उठकर हमें दिमाग के अंदर दाखिल होना है। वह परिपूर्ण परमात्मा जिसने हमारी रक्षा करनी है वह बाहर नहीं हमारे दिमाग के अंदर बैठा हमारी इंतजार कर रहा है।

सन्त हमें प्यार से बताते हैं कि हमें लगातार सिमरन करना चाहिए। सिमरन करते हुए अपने ख्याल को बाहर न भटकने दें, तीसरे तिल पर एकाग्र करें। मन को शान्त करने का भाव इतना ही होता है कि आप अपने अंदर दुनिया के ख्याल न उठाएं। हम घर के कारोबार छोड़कर यहाँ आए हैं, यहाँ उन्हें याद करने का फायदा नहीं; वे काम हम घर जाकर ही कर सकते हैं। हम यहाँ जिस काम के लिए आए हैं उसे ही याद रखें। सिमरन करें ताकि इस वक्त से पूरा फायदा उठा सकें। हाँ भई सिमरन करें।

26 अगस्त 1985

***

धन्य अजायब

परम सन्त अजायब सिंह जी की दया से दिल्ली में 19, 20 व 21 मई 2017 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। सभी प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में प्रार्थना है कि सतसंग में पहुँचकर लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,

भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार(नज़दीक पीरागढ़ी चौक)नई दिल्ली-87

फोन - 98 10 21 21 38, 98 10 79 45 97, 98 18 20 19 99

अहमदाबाद में 7, 8 व 9 जुलाई 2017 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,

फुटबाल ग्राउंड के सामने,(कांकरिया झील के पास)

अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)

फोन - 97 25 00 57 94, 96 38 75 20 20, 98 98 46 53 69